

पाठ—3 अंबा और भीष्म

राजा शांतनु के पश्चात विचित्रवीर्य को हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बिठा दिया गया।

काशीराज ने अपनी कन्याओं के स्वयंवर में सभी राजाओं को आमंत्रित किया।

काशीराज कन्याओं के स्वयंवर में भीष्म सम्मिलित हुए।

भीष्म ने समस्त राजाओं को पराजित कर तीनों कन्याओं को जीत लिया और बलपूर्वक रथ पर बिठा लिया।

अंबा द्वारा भीष्म से विनती की गई कि मुझे शाल्वदेश के राजा को सौंप दिया जाए क्योंकि मैं उन्हें मन ही मन अपना पति मान चुकी हूँ।

अंबिका और अंबालिका का विचित्रवीर्य से विवाह करा दिया गया और अंबा को शाल्वदेश के राजा के पास भेज दिया गया।

विचित्रवीर्य और अंबिका के पुत्र धृतराष्ट्र और
अंबालिका के पुत्र पांडु कहलाए ।

शाल्वदेश के राजा के द्वारा अंबा को ठुकराए
जाने पर अंबा के मन में भीष्म से प्रतिशोध लेने
की भावना जगी ।

अंबा द्वारा भीष्म से प्रतिशोध लेने की भावना
का बलवती होने के कारण वह महर्षि परशुराम
के आश्रम में गई ।

बीस दिनों तक भीष्म और परशुराम में युद्ध होने पर भी जब कोई परिणाम नहीं निकला तो वह तपस्या करने के लिए चली गई।

अंततः अंबा द्वारा कठोर तपस्या की गई और परिणामस्वरूप वह स्त्री रूप छोड़कर पुरुष बन गई और शिखंडी नाम से प्रसिद्ध होकर संसार में विचरण करने लगी।